

## भारतीय ज्ञान परम्परा के स्रोत और विशेषताएं

डॉ० मो० इमरान खान

एसोसिएट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान

मुमताज़ पी.जी. कॉलेज, लखनऊ

प्राचीन भारत की राजनीतिक विचारधाराओं को मुख्यतः धर्म—प्रधान, अर्थ—प्रधान तथा दण्ड प्रधान तीन वर्गों में रखा जाता है। वैदिक साहित्य, महाकाव्यों एवं बौद्ध ग्रन्थों में जो राजनीतिक विचार मिलते हैं, वे क्रमबद्ध एवं स्वतंत्र राजनीतिक चिन्तन का आभास नहीं कराते। कौटिल्य का अर्थशास्त्र स्वतंत्र एवं निपेक्ष राजनीतिक चिन्तन का ज्ञान कराने वाला प्रथम ग्रन्थ है। कौटिल्य के पूर्वगामी विचारकों का भी अपना—अपना योगदान है। प्राचीन भारतीय ज्ञान विचारों के स्रोत का आधार धार्मिक ग्रन्थ रहे हैं जिनमें ब्राह्मण धर्मग्रन्थ, बौद्ध और जैन धर्मग्रन्थ प्रमुख हैं। ब्राह्मण धर्म ग्रन्थ में रिग्वेद, सामवेद, अजुर्वेद और अथर्ववेद। प्राचीन भारत का प्राचीनतम ज्ञान वेदों में ही संरक्षित है। जिससे राज्य की उत्पत्ति, राजा, सभा, समिति, युद्धकला, न्याय—व्यवस्था आदि का पता चलता है।

प्राचीन भारत का ज्ञान एवं चिन्तन स्मृतियों, महाकाव्यों, पुराणों आदि में देखने को मिलता है। मनु द्वारा रचित 'मनुस्मृति' प्रमुख है। 'महाभारत' राजशास्त्र का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, इसके शान्तिपर्व के अध्याय में राजा के कर्तव्यों, शासन के सभी अंगों का वर्णन मिलता है। इसमें कृष्ण के उपदेश भगवद्गीता नाम से प्रसिद्ध है इसमें 600 श्लोक हैं जिनमें उपनिषदों एवं सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान का सारांश है। पश्चिमी विचारक सेलेटोर के अनुसार प्राचीन भारत की राजनीतिक विचारधाराओं में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य कौटिल्य की विचारधारा है। जैन और बौद्ध धर्म ने प्राचीन विचारों से भेद रखते हुए बहुदेववाद का विरोध किया। बुद्ध के समय अनेक गणतंत्रात्मक राज्य थे मगध, और आवन्ति वत्स और कौशल प्रमुख राज्य थे किन्तु पुष्यमित्रसुंग के काल में बौद्ध धर्म की मान्यताओं से भेद करते हुए पुनः वैदिक परम्परा को स्थापित किया गया।

विभिन्न संस्कृतियों ने भी भारतीय प्राचीन विचारों को सुदृढ़ बनाया है। संस्कृति सरिता का प्रवाह मार्ग है, जो बदलता रहता है। यह सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवहार का मिलन है। संस्कृति मनुष्य के भीतर व्यवहार ज्ञान एवं विवेक पैदा करती है। संस्कृति का सभ्यता से मधुर रिश्ता होता है। सभ्यता का सम्बन्ध उपयोगिता के क्षेत्र से है और संस्कृति का मूल्यों के क्षेत्र से। मैकाइवर

जो एक आधुनिक बहुसमुदायवादी विचारक है उसका कहना है कि, “सभ्यता तथा संस्कृति में वह सम्बन्ध है जो साध्य और साधन में होता है, ये दोनों मनुष्य के सृजन करने वाले क्रिया कलापों के परिणाम हैं। जब ये उपयोगी लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं तब सभ्यता का जन्म होता है और जब मूल्य भावना, चेतना तथा कल्पना को प्रबुद्ध करते हैं तब संस्कृति का उदय होता है। कोई वैज्ञानिक अपने प्रयोग में यदि सत्य की खोज करता है तो उसका कार्य सांस्कृतिक है और जब वह प्रकृति की शक्तियों को मानाव उपयोगिता के लिए नियन्त्रित करता है तो वह सभ्यता का निर्माण करता है। इसी प्रकार विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक विचारकों तथा विद्वानों ने आदर्श समाज की रूपरेखा बनाते समय मनुष्य की उपयोगिता का ध्यान रखा।”

आज के किसी भी विकसित देश की संस्कृति सैकड़ों वर्षों से प्रचलित विभिन्न संस्कृतियों का ही परिणाम है। इसी तरह भारत की हड़प्पा संस्कृति, वैदिक, जैन, बौद्ध, मौर्यकालीन संग-सातवाहनकालीन, कुषाणकालीन, गुप्तकालीन, सल्लनकालीन, मुगलकालीन संस्कृतियों से हमें भारत के विभिन्न युगों के संबंध में मानवजीवन के विभिन्न पक्षों – राजा, राज्य, सरकार, शासन, प्रणाली, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था, शिक्षा, साहित्य, वर्ण व्यवस्था रहन-सहन, आचरण-व्यवहार आदि की जानकारी मिलती है। सभी प्राचीन जानकारी हमारी वर्तमान पहचान को इंगित करती है।

पाश्चात्य अनेक विचारकों और लेखकों ने भारतीय प्राचीन विचार को अधिक महत्व नहीं दिया इसका एक मुख्यकारण, संस्कृत में अद्वारित विचारों का अंग्रेजी में अनुवाद का न होना है। किन्तु मैक्सी इनकी महत्ता के बारे में कहता है, “ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत का राजनैतिक इतिहास यूरोप के इतिहास से अधिक प्राचीन है, और राजनीतिक विचारों की दृष्टि से भी निष्फल नहीं है।” भारतीय राजनीतिक दर्शन और संस्कृति का व्यवस्थित अध्ययन काफी देरी से 18वीं सदी के आखिरी वर्षों में शुरू हुआ 1784 में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के कुछ आचार्यों की पहल से बंगाल में एशियाटिक सोसास्टी की स्थापना हुयी वह कलकत्ता के फोर्टविलियम कालेज के नाम से प्रसिद्ध हुआ जहाँ पूर्व और पश्चिम के साहित्य का मिलन हुआ। ब्रिटिश शासकों के हितों ने भी ऐसा करने पर उन्हें मजबूर किया यहाँ पूंजीवाद को बढ़ाने के लिए विज्ञान और संस्कृति का ज्ञान पाना खुराक बन गयी। वे अपनी सत्ता को मजबूत करने के लिए भारतीय परम्पराओं और इतिहास से अवगत होना चाहते थे। 19वीं सदी के शुरू में दर्शन और धर्म के अधिकांश ग्रन्थों का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद हुआ। इन ग्रन्थों ने बहुत से भारतीय बुद्धिजीवियों की रुचि को अपने देश के इतिहास के प्रति उन्मुख किया।

प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा पर विवाद रहा है विशेषकर उसकी धर्म प्रधान राजनीति और उसके अन्तर्गत वार्णाश्रम व्यवस्था को लेकर फिर भी इसकी ऐतिहासिक परम्परा है, जिसने मानव सभ्यता में अपना योग्यदान दिया है। हड़प्पा सभ्यता समृद्ध थी, मौर्यकालीन साम्राज्य तथा बुद्ध से प्रभावित अशोककाल ने विश्व को शान्ति का मार्ग दिखाया। यह अलग बात है कि अशोक के बाद पुनः धर्म प्रधान राजनीति केन्द्र में आयी उसके बाद सल्तनत और मुगल काल ने भारत को संगठित रूप में पिरोने का कार्य किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और राजनीतिक चिन्तन में समन्वय शक्ति सदा मौजूद रही। प्राचीन भारत में राजनीतिक सिद्धांतों का विकास धर्म के अंग के रूप में हुआ। राजा और शासन का कर्तव्य धर्म का पालन करना समझा गया और शत्रु से भी धर्म युद्ध करने का निर्देश दिया गया। इसी वजह से भारत की राजनीति में नैतिकता का समावेश रहा। यहाँ धर्म धृत से बना है यानि धारण करना। अतः राजा का धर्म न्याय करना है। इसीलिए राजनीति शास्त्र को नीति शास्त्र भी कहा गया है। 'कामन्दक' के समय में जो 'नीति' शब्द राज्य की नीति के संबंध में प्रयुक्त किया जाता था वही अब 'आचरण' के लिये प्रयुक्त होता है। राजनीति तो इसका एक भाग मात्र थी।

जीवन के तीन लक्ष्य धर्म, अर्थ और काम की राज्य के बिना प्राप्ति सम्भव नहीं है। ऐसा प्राचीन विचारको का मत रहा है। व्यक्तिवादी और अराजकतावादी विचारों के विपरीत प्राचीन भारतीय राजनीतिशास्त्रीय राज्य का विस्तृत कार्यक्षेत्र मानते थे जो काफी हद तक आज के कल्याणकारी राज्य के तरह था। सभी प्राचीन विचारको (मनु, कौटिल्य, भीष्म और शुक्र आदि) का मानना था कि राज्य का कर्तव्य न्याय का प्रशासन करना है और प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है। सभी विचारकों ने राजा को 'दैवीय' माना और राज्य में दैवी गुणों का समावेश माना। राजा पर धर्म का प्रतिबन्ध है व मंत्री परिषद की सलह से कार्य करता है किन्तु अनेक बाद राजा ने अपनी मर्जी से कार्य किया, व्यवहारिक रूप में वह नैतिक व धार्मिक प्रतिबंधों को मानने के लिये बाध्य नहीं था।

भारतीय राजदर्शन आदर्शवादी न होकर वैवाहारिक रहा है व 'यूटोपिया' नहीं। प्राचीन भारत में राज्य के कार्यों व उद्देश्यों का विस्तृत वर्णन है जैसे राज्य की रक्षा के साथ, लोगों के आर्थिक, भौतिक कल्याण पर भी ध्यान दिया गया। वैदिक साहित्य और अन्य प्राचीन ग्रन्थों से यह पता चलता है कि शान्ति व्यवस्था, सुरक्षा और न्याय राज्य के मुख्य उद्देश्य थे। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राज्य का उद्देश्य धर्म (सदाचार), अर्थ और काम की वृद्धि करना बताया है। धर्म की वृद्धि का अर्थ सदाचार और सुनीति को प्रोत्साहन देना, अर्थ की वृद्धि के तहत कृषि उद्योग और वाणिज्य का विकास तथा कृषि की उन्नति के लिये सिचाई, बांध और नहरों का प्रबन्ध तथा खानों, तलाबों और कुओं को

खोदना था। काम की वृद्धि का अभिप्राय था देश में शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित करके प्रत्येक नागरिक को बिना किसी बाधा के सब तरह के न्यायपूर्ण सुखों को भोगने का अवसर दिया जाए, संगीत, नृत्य, चित्रकला, भवन निर्माण, ललित कलाओं के पोषण से सुरुचि और संस्कृति का विकास किया जाए।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :-**

1. डॉ० आर.सी. गुप्ता – इण्डियन पोलिटिकल थॉट
2. डॉ० गंगादत्त तिवारी – प्रमुख राजनीतिक चिन्तक
3. सत्यमित्र दूबे – मनु की समाज व्यवस्था
- 4- U.N. Goshal – A History of Indian Political Ideas
- 5- Beni Prasad – Theory of government of Ancient India